ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

नेपाली लोक गीतों का वर्गीकरण

डॉ. ज्योति भंडारी

एसोसिएट प्रोफेसर, संगीत विभाग, त्रिभुवन विश्वविद्यालय, नेपाल

सार-संक्षेप

प्रकृति के गोद में पले पहाड़ ही पहाड़ से मंडित रमणीय देश नेपाल के लोगों का प्रकृति के साहचर्य रहकर उससे प्रभावित होना स्वाभाविक है। नेपाली की दैनिकी सूर्योदय के साथ ही शुरू होती है और सूर्यास्त के साथ समाप्त। चिड़ियों की चहक, चकी, ढेंकी (ढेंकली) की आवाज, शंख-घण्टे की ध्वनि, मंत्र-श्लोक, भजन-कीर्तन के स्वर घर तथा मन्दिरों में यत्र-तत्र सुनाई पड़ते हैं। नेपाल के जनजीवन में लोकसंगीत का बहुत प्रभाव पड़ा है। नेपाली के जीवन में जन्म से लेकर मृत्युपर्यन्त लोकसंगीत साथ देता है। जन्म के साथ ही रोने और हंसने की भाँति ही नेपाली लोक जीवन संगीतमय है।

नेपाल में राई, लिम्बु, गुरूंग, थारू, दनुवार आदि जात-जातियों के बसोवास हैं। उनमें नेवार जाति का स्थान प्रमुख है। इस जाति का विशेष योगदान है। अन्य जाति की भाषा की तरह ही नेवार की भाषा में भी लोकसंगीत की प्रधानता विशेष रूप से दिखाई पड़ती है। लोकगीत में भी नेवारी गीतों ने अपनी मौलिक विशिष्टता कायम करते आये हैं। नेवारी लोकगीत-संगीत में लोकनृत्य की अधिक प्रधानता दिखाई पड़ती है। परन्तु अन्य लोकनृत्य अलग-अलग स्थानों में अलग-अलग ढंग और शैली के साथ अपने मौलिक रूप में प्रस्तुत किये जाते हैं। प्रस्तुत शोध पत्र में नेपाल के लोकगीतों का वर्गीकरण करते समय विभिन्न विद्वानों के मत-मतान्तर प्रस्तुत किए गए हैं जिससे नेपाल के लोक गीतों की विभिन्न प्रकार के लोक गीतों की समृद्धता का पता चलता है।

शोध-पत्र

लोकगीतों का वर्गीकरण

लोक अविभाज्य नाम है। इस असीमित क्षेत्र में व्याप्त लोक के साथ संयुक्त लोकगीत को सीमित करना कठिन है। असंख्य रूप में दिखाई पड़ने वाले लोकगीत के अनेक रूप और विविध विषय हैं। समय परिवर्तन के साथ ही लोकगीत के विभिन्न भेद भी परिवर्तित होते हैं। आज एक विषय और रूप में मिलने वाले लोकगीत में परिवर्तन होता है। असीमित क्षेत्र में व्याप्त, असंख्य रूप में मिलने वाले तथा समय के परिवर्तन के साथ ही परिवर्तित होने वाले ''रूप और विषयगत विविधता'' होने वाले लोकगीत के वस्तुपरक वर्गीकरण बहुतों ने किया है परन्तु सर्वसम्मत वैज्ञानिक तथा दोषरहित वर्गीकरण किसी ने नहीं कर पाया है। ऐसी स्थिति होते हुए भी अध्ययन की सरलता के लिए प्राप्त लोकगीतों का वर्गीकरण आवश्यक है। अत: यहाँ पूर्व अनुसंधाताओं के वर्गीकरणों का अवलोकन उनके आधार पर लोकगीत के वर्गीकरण का आधार पहचान कर लोकगीत का वस्तुपरक वर्गीकरण के कार्य किया गया है।

गोविन्द चातक ने गढ़वाली लोकगीत को विषय के आधार पर धार्मिक गीत, संस्कार गीत, ऋतुगीत, नृत्यगीत, प्रणयगीत, विविध गीत एवं लोकगाथा सहित सात भागों में वर्गीकरण किया है।[1] विषयगत आधार पर यह वर्गीकरण भी स्वीकार्य है परन्तु निर्विवाद नहीं है।

सत्येन्द्र ने क्षेत्र के आधार पर नगर के लोकगीत, जंगली लोकगीत, जातीय आधार में विभिन्न भेद, अवस्था के आधार में भेद (बालगीत, युवा युवती के गीत) लिंग भेद के आधार में (स्त्री गीत, पुरुष गीत), उपयोगिता के आधार में (अनुष्ठानिक, उद्योग सम्पर्कित तथा तिथिवारक) वस्तु भेद के आधार में (स्तुत्यात्मक, बाल कल्याणपरक, पराक्रममूलक तथा प्रेमगीत), रूप भेद के आधार पर (मुक्तक गीत तथा प्रबन्धगीत) तथा प्रकृति भेद के आधार पर (गेय गीत तथा पाठ्यगीत) वर्गीकरण किया है।[2] विभिन्न आधार को मानकर किया गया और यह वर्गीकरण थोड़ा वस्तुपरक सुन्दर माना जाता है।

संतराम अनिल ने विविध विद्वानों के वर्गीकरणों की समीक्षा करते हुए कनौजी लोकगीत को इसके आधार पर, राग के आधार पर, कथावस्तु के आधार पर (मुक्तक, लघु कथात्मक) तथा अवसर की अनुकूलता के आधार पर (संस्कार गीत, ऋतुगीत, व्रतगीत, कृयागीत, जातीय गीत) चार भागों में वर्गीकरण किया है।[3] स्वर्णलता ने विविधि विद्वानों के वर्गीकरण की समीक्षा करती हुई विषय के आधार में लोकगीत को संस्कार सम्बन्धी गीत, व्यावसायिक गीत, आवसारिक गीत एवं मनोरंजनात्मक गीत के रूप में वर्गीकृत की है।[4] विषय के आधार पर किया गया यह वर्गीकरण अधिक तथ्यपरक बन सका है।

कृष्णदेव उपाद्याय ने (1) संस्कार के आधार पर, (2) रसानुभूति प्रणाली के आधार पर, (3) ऋतु-व्रत क्रम के आधार पर, (4) जातीय विविधता के आधार पर, (5) स्थान के आधार पर लोकगीत का वर्गीकरण के पाँच आधार प्रस्तुत किया है। इसके बाद के विद्वानों ने वर्गीकरण की समीक्षा करते हुए लोकगीत को (1) संस्कार गीत, (2) ऋतु गीत, (3) व्रत गीत, (4) जातीय गीत (5) श्रम गीत तथा (6) विविध गीत के रूप में छ भागों में वर्गीकरण किया है।[5]

कालीभक्त पंत ने नेपाली लोकगीत को राष्ट्रभाषा-स्तरीय गीत, जिला स्तरीय गीत, लोकनाट्य स्तरीय गीत, जाति स्तरीय गीत, पर्वत स्तरीय गीत, ग्राम स्तरीय गीत, जातीय भाषा स्तरीय गीत, कार्य स्तरीय गीत तथा ऋतुस्तरीय गीत कहकर नौ भागों में वर्गीकरण किया है।[6]

धर्मराज थापा तथा हंसपुर सुवेदी ने पूर्व अद्येताओं के वर्गीकरणों की समीक्षा करते हुए नेपाली लोकगीतों को सामान्य गीत, संस्कार गीत, ऋतु गीत, कर्मगीत, पर्व गीत, लोकनृत्य या नृत्यगीत तथा विविध गीत के रूप में सात भागों में विभाजन किये हैं।[7]

मोहनराज शर्मा तथा खगेन्द्र लुइँटेल ने नेपाली लोकगीत को (1) क्षेत्रीयता के आधार पर: हिमाली लोकगीत, पहाड़ी लोकगीत, मधेशी लोकगीत, पूर्वी लोकगीत, पश्चिमी लोकगीत, डोटेली लोकगीत, पाल्पाली लोकगीत, (2) जातीय आधार पर: थारू लोकगीत, नेवारी लोकगीत, तामाङसेलो, भोटेसेलो, शेर्पा लोकगीत, दमाई लोकगीत, दुरा लोकगीत, गन्धर्व लोकगीत, किराँती लोकगीत, लिम्बु लोकगीत, राई लोकगीत, मगर गुरूंग लोकगीत, ब्राह्मण-क्षत्रिय लोकगीत, (3) उम्र के आधार पर: बालगीत, शिशु गीत, युवा गीत, बृद्धगीत, (4) लिंग के आधार पर: महिला लोकगीत, पुरुष लोकगीत, महिला-पुरुष लोकगीत, (5) सहभागिता के आधार पर: एकल लोकगीत, सामूहिक लोकगीत, दोहरी लोकगीत, (6) बनावट के आधार पर: भावप्रधान लोकगीत, घटना प्रधान लोकगीत, (7) प्रस्तुति के आधार पर: कण्ठ्य गीत, वाद्य गीत, नृत्यगीत, (8) विषय के आधार पर: धार्मिक गीत, सांस्कारिक गीत, श्रम गीत, (9) समय के आधार पर: सामयिक लोकगीत, सदाबहार लोकगीत तथा (10) आकार के आधार पर: लघु गीत और लघुत्तम गीत (को) दस भागों में वर्गीकरण किया गया है।

इन वर्गीकरणों का विश्लेषण करने से मुख्यत: दो प्रकार के वर्गीकरण दिखायी पड़ते हैं। एक हैं उल्लेख बिना का वर्गीकरण और दूसरा है आधार बताकर किया गया वर्गीकरण। आधार बिना का वर्गीकरण स्वयं में कमजोर तथा आलोच्य वर्गीकरण है तो कुछ आधारयुक्त वर्गीकरण होकर भी त्रुटिपूर्ण मिलते हैं।

इसीलिए यहाँ बहुत विद्वानों द्वारा स्वीकार किया गया एवं स्वीकृति योग्य आधारों को समेट कर लोकगीत के वर्गीकरण करने का आधार तैयार किया गया है। वे आधार निम्न प्रकार हैं—

(1) भूगोल, (2) जाति, (3) उम्र, (4) लिंग, (5) सहभागिता, (6) प्रस्तुति, (7) विषय-वस्तु, (8) आकार-प्रकार, (9) गायन-समय, (10) गायन-अवसर तथा (11) प्रकीर्ण (मिश्रित)।

इन्हीं के आधार पर यहाँ लोकगीत वर्गीकरण किया जाता है।

1. भूगोल के आधार में लोकगीत :

लोकगीत गायक तथा गायिका का बसोवास विभिन्न भूभाग पर होने के कारण उनके गीतों का सम्बन्ध भी विभिन्न भूमि से होता है। कितने लोकगीत और उनके स्वर तथा लय द्वारा उस भूमि का प्रतिनिधित्व होता है। इसी बजट से सतेन्द्र जी ने लोकगीत को क्षेत्रीय आधार पर नागर गीत, ग्रामीण गीत तथा जंगली गीत कहकर विभाजन किया है।[8] पूर्वी लोकगीत, पश्चिमी लोकगीत, मधेशी लोकगीत (तराई के लोकगीत) आदि नामाकरण कर पहचान करायी।[9] इस तरह भौगोलिक दृष्टि से लोकगीत को अलग वर्गीकरण योग्य बना सकने के कारण यहाँ पश्चिमांचल प्रान्त के लोकगीत के भेद का वर्गीकरण इस प्रकार प्रस्तुत किया जा सकता है—(1) गण्डकी के आँचलिक लोकगीत (2) धवलगिरि के आँचलिक लोकगीत (3) लुम्बिनी प्रान्त के आँचलिक लोकगीत (4) गोरखा के आँचलिक लोकगीत (5) लमजुंग क्षेत्र के आँचलिक लोकगीत (6) तनहुँ प्रान्त के आँचलिक लोकगीत (7) स्यांगजा क्षेत्र के स्यांगजाली आँचलिक लोकगीत (8) बागलुंग प्रदेश के आँचलिक लोकगीत (9) म्यागदेली लोकगीत तथा (10) पै. युँखोले लोकगीत। इसी तरह लमजुंगी-लय, आँधीखोले-लय, घुँघट-लय आदि उस प्रान्त का प्रतिनिधित्व करती हैं।

जातीय आधार पर लोकगीत :

लोकगीत, सभी जाति के लोग प्राय: गाते हैं। उनमें कुछ लोकगीत सभी जाति का लोकगीत बनकर पहचान बनाता है। निश्चित जाति विशेष का लोकगीत उस जाति का प्रतिनिधित्व करता है। लोकगीत के सन्दर्भ में किसी लोकगीत का नाम लेने पर सम्बन्धित जाति का परिचय मिलता है तो किसी जाति का नाम लेने पर उस जाति से सम्बन्धित लोकगीत का परिचय मिलता है। इसीलिए लोकगीत का अद्येता कृष्णदेव उपाद्याय ने अहिर गीत, दुसाधगीत आदि कहकर जातीय दृष्टि से लोकगीत के अनेक प्रकार प्रस्तुत किया है।[10-11] ऐसे ही नेपाली लोकगीत का अद्येता कृष्ण प्रसाद पराजुली ने भी जातीय आधार में तामांग गीत, शेर्पा गीत, नेवार गीत, अहिर गीत, थारू गीत, ब्राह्मण गीत, गन्धर्व गीत का उल्लेख किया है।[12] इसी प्रकार जातीय दृष्टि से पश्मिांचल के लोकगीत का वर्गीकरण किया जाय तो—(1) गन्धर्व गीत (मंगल राग), (2) ब्राह्मण गीत (भजन, कीर्तन, खेली), (3) क्षत्रिय गीत (खाँडो, वीरगाथा), (4) मगरगीत (कौरा, झाम्रे), (5) गुरूंग गीत, (6) गुरूंग मगर गीत (सांलैजो, यानिमयाँ, सुनिमया), (7) माझी गीत, (8) दुरागीत (दुरालय) आदि रूप सामने आते हैं।

उम्र के आधार पर लोकगीत :

लोकप्रियता के कारण विविध उम्र के लोग लोकगीत गाते हैं। बाल-बालिकाएँ अर्थहीन तथा अर्थमुक्त दोनों प्रकार के लोकगीत गाते हैं। प्रौढ़ पुरुष-महिला मंदगति के भक्तिगीत एवं विरक्तिपूर्ण लोकगीत गाते हैं। युवा-युवती युगानुकूल प्रेमपरक लोकगीत गाया करते हैं। इसीलिए सतेन्द्र ने अवस्था-भेद के आधार पर बालगीत तथा वृद्धगीत कहा है।[13] इसी तरह कृष्ण प्रसाद पराजुली ने भी बालगीत, युवा-युवती गीत तथा वृद्ध गीत कहकर उल्लेख किया है।[14] उन्होंने उम्र के आधार पर (1) बालगीत (चि मसी ची आदि), (2) युवागीत (प्रेमपरक गीत, संयोग-वियोग गीत, खेलगीत, चुड्का आदि), (3) वृद्धगीत (मंगल, यानिमायाँ, सुनिमायाँ, मालश्री आदि) का वर्गीकरण किया है।

लिंगभेद के आधार पर लोकगीत

लोकगीत नारी-पुरुष दोनों गाते हैं। परन्तु कुछ लोकगीत सिर्फ महिलाएँ गाती हैं तो कुछ लोकगीत सिर्फ पुरुष मात्र गाते हैं। इसीलिए कुछ अद्येता नारीगीत और पुरुष गीत में भेद करते हैं, किया है ।[15-16] परन्तु कुछ लोकगीत महिला-पुरुष दोनों गाते हैं। पश्चिमांचल के लोकगीत को लैंगिक आधार पर—

नारी गीत : जन्माष्टमी, तीज गीत, पंचमी गीत, भैली, वाली, माँगल, रतौली, खुड़का आदि।

पुरुष गीत : भैली-देउसी, दाँइ गीत, फेरी, कौरा आदि है।

इसी प्रकार नारी-पुरुष गीत में नारी-पुरुष द्वारा गाया जाने वाला दोहरी, एकहोरी आदि करके तीन भागों में लैंगिक गीत को विभाजित किया गया है।

सहभागिता के आधार पर लोकगीत

लोकगीत गाने के कार्य में सहभागी व्यक्ति किसी गीत में एक होता है तो किसी लोकगीत में दो व्यक्ति और किसी लोकगीत में दो से भी अधिक व्यक्ति सहभागी होते हैं। इसीलिए अध्येताओं ने सहभागिता के आधार पर एकलगीत, दोहरीगीत तथा समूहगीत या सहगान कहकर तीन भागों में वर्गीकरण किया है।[17] (बन्धु 2.58: 81)। परन्तु दोहोरी गीत में दो से अधिक गायक भी होते हैं। इसीलिए पश्चिमांचल के लोकगीत को (1) एकल गीत (दाँई गीत, खाँडो गाथा आदि), (2) युगल गीत (दोहरी, सिलोक, दोहरी फाग गीत आदि), (3) सामूहिक गीत या सहगान (सेंदो, सराएं आदि) कहकर तीन भागों में अलग किये हैं।

प्रस्तुति के आधार पर लोकगीत

लोकगीत गाते वक्त वाद्य तथा नृत्य की भी भूमिका होती है। जो गीत बाजा बिना गाया जाता है। उस लोकगीत जो कुछ लोग एकलगीत, समूहगीत, वाद्यगीत तथा वाद्यविहीन गीत कहकर चार भागों में अलग करते हैं।[18] साथ ही कुछ लोगों ने (1) शुद्धगीत, (2) नृत्यगीत, (3) वाद्यगीत तथा (4) नृत्यवादी गीत कहकर भी विभाजन किया।[19] इसी तरह किसी-किसी स्थान में कण्ढ्य गीत, वाद्यगीत तथा नृत्यगीत के रूप में तीन भागों में बाँटा गया दिखाई पड़ता है ।[20] ऐसी विविधता और विषमता से दूर जाकर बाजा-नृत्य सहित गीत से अलग बाजा नृत्य रहित गीत को शुद्धगीत, बाजा के साथ गाने वाले गीत को वाद्यगीत नाचकर गाने वाले गीत को नृत्य एवं बाजा के साथ नृत्य करके गाने वाले गीत को वाद्यनृत्यगीत के रूप में 4 भागों में वर्गीकरण करना उचित जान पड़ता है। वाद्य नृत्यगीत के रूप में 'कौरा' आदि को लिया जा रहा है।

विषय के आधार पर लोकगीत—

प्रत्येक लोकगीत का कोई न कोई विषय अवश्य होता है। वह विषय समाज तथा इसके विविध पक्षों से जुड़ा होता है। उसको पैनी दृष्टि से अवलोकन करने पर किसी लोकगीत में धर्म को विषय बनाया गया मिलता है, किसी में संस्कार का विषय होता है तो किसी में पर्व त्योहार का विषय मिलता है। इसी तरह कितने लोकगीत में जीवन से सम्बन्धित जीविका तथा कार्यों का विषय भी समाहित रहते हैं। इसीलिए विषय के आधार में लोकगीत को निम्न चार भागों में वर्गीकृत करना सान्दर्भिक होता है—(1) धार्मिक लोकगीत: भजन, कीर्तन, आरती, मालश्री आदि। (2) सांस्कारिक लोकगीत: माँगल, मंगल, खाँडो, रत्चौली, गाथा। (3) पार्विक लोकगीत: जन्माष्टमी गीत, तीज गीत, पं. चयी गीत आदि। (4) कर्म लोकगीत: आसारे, साउने, भदौरे, दाँइगीत आदि।

आकार के आधार पर लोकगीत—

लोकगीत विभिन्न आकार के होते हैं। कोई छोटा आकार का होता है और कोई लोकगीत पुनरावृत्ति के कारण बड़ा और लम्बा हो जाता है। कोई लोकगीत अलग-अलग पंक्तियाँ तथा चरण के कारण भी लम्बा हो जाता है। इसीलिए सतेन्द्र ने रूप-आकार भेद के आधार पर लघुगीत (मुक्तक गीत) तथा वृहत गीत (प्रबन्धगीत) के रूप में विभाजन किया है।[21] इसी तरह संतराम अनिल ने कथातन्तु के आधार पर मुक्तकगीत एवं कथात्मक गीत।[22] कक्षपति ने स्वरूप के आधार पर मध्यम आकार के गीत, लघुगीत तथा लघुतम गीत।[23] कृष्ण प्रसाद पराजुली ने भी स्वरूप के आधार पर मुक्तकगीत (भावप्रधान) तथा प्रबन्धगीत (कथा प्रधान)[24] आदि कहकर अपने-अपने ढंग से वर्गीकर किया है। इनके अध्ययन तथा लोकगीत के आकार पर चिन्तन करते हुए वर्गीकरण करने से यहाँ के लोकगीत को (1) लघुत्तम लोकगीत (टुक्का गीत के स्थायी आदि), (2) लघुगीत (रत्मौली, खेलकर गाने वाला आदि) तथा (3) मध्यम गीत (बारहमासा, देउसी, भैली आदि) तीन भागों में बाँटना उचित होता है।

गायन समय के आधार पर लोकगीत—

लोक में कुछ लोकगीत गाने का समय निर्धारित किया गया है। समय निर्धारित लोकगीत निश्चित समय में गाने पर ही वह उसका पूर्ण अर्थ वहन कर सता है। अन्यथा वह लोकगीत अपना अर्थपूर्ण भाव और परिचय देने में असमर्थ हो जाता है। सामयिक लोकगीत पर दृष्टिपात करने पर कुछ लोकगीत प्रभात के समय में कुछ दिन में, कुछ लोकगीत सांय वेला और कुछ रात्रि प्रहर में गाये जाते हैं। अत: सामयिक लोकगीत को (1) प्रभाती, आरती, भजन, (2) दिवसीय तथा (3) सांयकालीन गीत को समय के आधार में तीन भागों में विभाजन किया जा सकता है।

गायन-अवसर के आधार पर लोकगीत—

लोकगीत गाने का अवसर, मौका तथा सुयोग होते हैं। अवसर पर गाने योग्य लोकगीत बेमौके पर नहीं गाना चाहिये। यह लोक धारणा यत्र-तत्र प्रचलित है। अत: कितने लोकगीत सांस्कृतिक सुयोग अवसर में ही गाया जाता है तो कितने लोकगीत सिर्फ पर्व विशेष ही में। इन्हीं पहलुओं पर विचार करते हुए लोकगीत को चार भागों में बाँटना उचित

समझा जाता है—

(1) सांस्कृतिक गीत: माँगल, मंगल, सिलोक आदि।

(2) पर्वगीत: जन्माष्टमी गीत, तीज गीत, मालश्री आदि।

(3) कर्म गीत: जेठी, आषादी, श्रावणी, चैती, फाग आदि तथा

(4) मनोरंजन गीत: सालैजु, सुनिमयां, बालगीत आदि।

प्रकार्य के आधार पर लोकगीत

लोक में बिखरे हुए अनेक प्रकार के लोकगीतों का मिश्रण जो विषय-वस्तु की दृष्टि से वर्गीकरण के अनेक आधार से मिलते-जुलते हैं, ऐसे लोकगीत प्रकीर्ण लोकगीत या मिश्रित, मिलाया हुआ लोकगीत के आधार में वर्गीकृत हो सकते हैं। ऐसे गीतों में मनोरंजन के लिए गाये जाने वाले लोकगीत मिलते हैं तो कुछ श्रम कार्य पर आधारित लोकगीत। इसी तरह कुछ संस्कारगत होते हैं तो कुछ धार्मिक अवसर से सम्बन्धित। इस पहलू को द्यान में रखते हुए लोकगीत को देखा जाय तो निम्न वर्गीकरण सामने आता है—(1) मनोरंजनात्मक लोकगीत, (2) श्रमगीत, (3) पर्वगीत, (4) संस्कार गीत तथा (5) धार्मिक गीत।

इन विभिन्न आधार में लोकगीत की विविधता एवं समानता (साम्य और वैषम्य) की पुष्टि की जा सकती है। इससे यह प्रमाणित होता है कि नेपाल और नेपाली लोकगीत विविध संस्कार, संस्कृति एवं गीत-संगीत से मंडित देश है। इसका क्षेत्र विशाल है, समान है और विविधतापूर्ण थी।

लोकगीत और लोकनृत्य—

लोकगीत तथा लोकनृत्य में गहन सम्बन्ध है। लोकगीत लय केन्द्रित होते हैं और लोकनृत्य ताल केन्द्रित। लय और ताल लोकगीत तथा लोकनृत्य दोनों से आबद्ध है। लोकगीत लय में प्रवाहित होते ही नर्तक-नर्तकी थिरकने लगते हैं। इसीलिए जहाँ नर्तक-नर्तकी नृत्य की तैयारी में जुटते हैं। वहाँ लोकगीत, लयबद्ध होने लगता है। कितने लोकगीत में नृत्य अनिवार्य होते हैं तो कितने लोकनृत्य में लोकगीत की आवश्यकता होती है। अत: लोकगीत तथा लोकनृत्य में नजदीक का परस्पर घनिष्ठ सम्बन्ध है।

पाद-टिप्पणियाँ

1. चूड़ामणि, बन्धु, नेपाली लोक साहित्य को विवेचना, पृ. 28
2. रामशरण दर्नाल, प्रपाली संगीतमा मंगलगीत को परम्परा, पृ. 126
3. गोविन्द लाख्वाली चातक, लोकगीत एक सांस्कृतिक अध्ययन, पृ. 40
4. सतेन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 323-332
5. अनिल सन्तराम, कन्नौजी लोक साहित्य, पृ. 49-51
6. स्वर्णलता, लोक साहित्य विमर्श, पृ. 44-47
7. कृष्णदेव उपाध्याय, लोकसाहित्य की भूमिका, पृ. 72-76
8. काली भक्त पन्त, हामरो सांस्कृतिक इतिहास, पृ. 1
9. धर्मराज थापा एवं हंसपुरे, नेपाली लोक साहित्य को विवेचना, पृ. 94
10. सतेन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 329
11. कृष्ण प्रसाद पराजुलि, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 146
12. कृष्ण देव उपाध्याय, लोक साहित्य की भूमिका, पृ. 75
13. सतेन्द्र, लोक साहित्य, पृ. 331
14. कृष्णा प्रसाद पराजुली, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 146
15. सतेन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, पृ. 323-332
16. कृष्ण प्रसाद पराजुलि, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 146
17. सतेन्द्र, लोक साहित्य, पृ. 331
18. कृष्ण प्रसाद पराजुलि, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 147
19. चुड़ामणि, पृ. 81
20. कक्षपति, पृ. 16
21. कृष्ण प्रसाद पराजुलि, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 147
22. सतेन्द्र, लोक साहित्य, पृ. 322
23. अनिल, पृ. 23
24. कक्षपति, पृ. 147
25. कृष्ण प्रसाद पराजुलि, नेपाली लोकगीतों का आलोक, पृ. 15

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

बन्धु, चुड़ामणि, नेपाली लोक साहित्य को विवेचना, एकता बुक्स, काठमाण्डौ

त्रिपाठी, जगन्नाथ दास,

चातक गोविन्द गढ़वाली, लोकगीत : एक सांस्कृतिक अध्ययन, दिल्ली, 1968

सतेन्द्र, लोक साहित्य विज्ञान, शिवलाल अग्रवाल एण्ड कम्पनी, आगरा, 1971

अनिल, सन्तराज कन्नौजी, लोक साहित्य, अभिनव प्रकाशन, दिल्ली, 1945

स्वर्णलता, लोक साहित्य विमर्श, रत्न स्मृति प्रकाशन, बीकानेर, 1978

उपाध्याय, कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका, इलाहाबाद, साहित्य भवन, 1971

पंत, काली भक्त, हामरो सांस्कृतिक इतिहास

थापा धर्मराज र हंसपुरे, नेपाली लोक साहित्य को विवेचना, पाठ्यक्रम विकास केन्द्र, 204

पराजुली, कृष्ण प्रसाद, नेपाली लोकगीतों का आलोक, वीणा प्रकाशन, त्तिप्ररेश्वर, काठमाण्डौ

शर्मा, भगवतशरण, ताल प्रकाश, संगीत कार्यालय, हाथरस

दर्नाल, रामशरण, नेपाली संगीतमा मंगलगीत को परम्परा, 204